पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त -

यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि इतिहास का कोई सामान्य आदर्श पाठ्यक्रम नहीं है, जो विश्व की समस्त जातियों के लिए उपयुक्त हो। परन्तु ऐसा पाठ्यक्रम बनाना सम्भव है। पाठ्यक्रम बनाते समय जिन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना चाहिए वे निम्नलिखित हैं -

1. एकता का सिद्धान्त
2. रुचि का सिद्धान्त
3. समन्वय तथा केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त
4. शैक्षिक मूल्य का सिद्धान्त -
5. समय का सिद्धान्त
6. वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त -
7. आन्तरिक परिस्थितियाँ
8. सामाजिक अनुरूपता का सिद्धान्त -

पाठ्यक्रम में नवाचार :

सन् 1960 ई० के बाद पाठ्यक्रम-विकास पर पुनर्विचार किया गया। इस क्षेत्र में ब्रुनर, हर्ड आदि विचारकों ने उल्लेखनीय कार्य किया। हर्ड (1969) ने पाठ्यचर्या में नवाचारों को इन शब्दों में व्यक्त किया है -

1. पाठ्यचर्या का निर्माण कार्य स्थानीय स्तर पर न किया जाये वरन् यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर हो।
2. विषय-वस्तुओं के चयन के लिए अवधारणा योजना को आधार बनाया जाय।
3. विषय-वस्तु का चयन विद्वानों अथवा अन्वेषकों द्वारा किया जाय।
4. शिक्षण छात्र-केन्द्रित हो तथा सीखने के लिए प्रयोगशाला का प्रयोग किया जाए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी

सर्विंग टू बी नामक प्रकाशन द्वारा पाठ्यचर्या में निम्नलिखित तत्वों को बल दिया गया है:-

(1)- विषय-वस्तु का चयन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए।
(2)- भिन्न-भिन्न विषयों का एकीकरण होना चाहिए।
(3)- पाठ्यचर्या द्वारा छात्रों के सामाजिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक पक्षों के विकास पर बल दिया जाना चाहिए।
(4)- विद्यालयीय पाठ्यचर्या वास्तविकता लिये हो।

तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञानिक आधार:-

मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार इतिहास-शिक्षा की व्यवस्था अभी विद्यालयों में नहीं हो पायी है। विभिन्न अवस्थाओं की क्षमता का ज्ञान प्राप्त करना और उसके पश्चात् यह पता लगाना कि प्रत्येक अवस्था पर किन तथ्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए, यह बड़ा जटिल कार्य है। बालकों की शिक्षा उनके मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए। इतिहास के अध्यापकों तथा पाठ्यक्रम के निर्धारकों का यह मुख्य कर्तव्य है कि विभिन्न अवस्था के विद्यार्थी-समूहों के लिए इतिहास की शिक्षा की व्यवस्था करें। शिक्षाशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों इस समस्या को मनोवैज्ञानिक रूप देने का प्रयत्न किया है। इस आधार के अनुसार पाठ्यक्रम बनाने के दो प्रयास किये गये।

(1) सांस्कृतिक-युग सिद्धान्त:-

सांस्कृतिक युग सिद्धान्त या पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के प्रवर्तक अमरीका के स्टेनले हॉल हैं। इन्होंने मानव-जीवन के प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के विकास पर गम्भीरता-पूर्वक विचार किया और मनुष्य के क्रमिक विकास का अध्ययन कर यह निश्चय किया कि मनुष्य अपने जीवन-काल में ही मानव-विकास के सम्पूर्ण क्रमों की पुनरावृत्ति करता है।

प्राचार्य

इस सिद्धान्त के प्रवर्तकों का विश्वास है कि बालक सर्वप्रथम स्वार्थी तथा असभ्य होता है। जो वस्तु उसके हाथ में आती है, वह उसको मरोड़-मरोड़कर देता है। उसके पश्चात उसे साहसिक कार्यों से पूर्ण कहानियाँ सुनना रुचिकर होता है, क्योंकि इस स्तर पर वह मनोवैज्ञानिक रूप से रुधिर के प्यासे हिंसक पशु के तुल्य है। इन्हीं बातों के आधार पर इतिहास के तथ्यों का निर्णय करना चाहिए। मानव-जाति की शिशु-अवस्था का इतिहास शिशुओं के लिए उपयुक्त है। बाल्यावस्था का इतिहास बालकों को पढ़ाना चाहिए और मानव-जाति के इतिहास का अन्तिम चरण प्रौढ़ों के लिए उपयुक्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम इतिहास शिक्षा की निम्नलिखित रूप से व्यवस्था कर सकते हैं:-

1. प्राचीनकाल का इतिहास -(प्राथमिक, प्राइमरीस्तरपर)
2. मध्यकाल का इतिहास (उच्चप्राथमिक या जूनियरस्कूल स्तरपर)
3. वर्तमान काल का इतिहास (हाई-स्कूल कक्षाओं के लिए)
4. वर्तमान काल का आलोचनात्मक इतिहास (उच्च कक्षाओं के लिए)

(2) जीवन - गाथा सिद्धान्त :

यह सिद्धान्त भी मनोविज्ञान पर आधारित है। इसका मुख्य प्रवर्तक कार्लाइल है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि इतिहास के तथ्यों का ~~निर्माण~~ निर्णय जीवन-गाथाओं के अनुसार हो सकता है। उनका विचार है कि महापुरुष अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः उनकी जीवन-गाथाओं को इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए अर्थात इन महापुरुषों की जीवन-गाथाओं के द्वारा इतिहास की शिक्षा प्रदान की जाए। कारलाइल का विचार है कि "सामान्य पुरुष भेड़ों के झुण्ड के समान हैं और महापुरुष उन शिकारी कुत्तों के समान हैं जो भेड़ों की रक्षा करते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

इस सिद्धान्त के प्रवर्तकों का विश्वास है कि बालक सर्वप्रथम स्वार्थी तथा असभ्य होता है। जो वस्तु उसके हाथ में आती है, वह उसको तोड़-फोड़ कर देता है। उसके पश्चात उसे साहसिक कार्यों से पूर्ण कहानियाँ सुनना रुचिकर होता है, क्योंकि इस स्तर पर वह मनोवैज्ञानिक रूप से रुधिर के प्यासे हिंसक पशु के तुल्य है। इन्हीं बातों के आधार पर इतिहास के तथ्यों का निर्णय करना चाहिए। मानव-जाति की शिशु-अवस्था का इतिहास शिशुओं के लिए उपयुक्त है। बाल्यावस्था का इतिहास बालकों को पढ़ाना चाहिए और मानव-जाति के इतिहास का अन्तिम चरण प्रौढ़ों के लिए उपयुक्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम इतिहास शिक्षा की निम्नलिखित रूप से व्यवस्था कर सकते हैं:-

1. प्राचीनकाल का इतिहास -(प्राथमिक, प्राइमरीस्तरपर)
2. मध्यकाल का इतिहास (उच्चप्राथमिक या जूनियरस्कूल स्तरपर)
3. वर्तमान काल का इतिहास (हाई-स्कूल कक्षाओं के लिए)
4. वर्तमान काल का आलोचनात्मक इतिहास (उच्च कक्षाओं के लिए)

(2) जीवन - गाथा सिद्धान्त :

यह सिद्धान्त भी मनोविज्ञान पर आधारित है। इसका मुख्य प्रवर्तक कार्लाइल है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि इतिहास के तथ्यों का ~~निर्मण~~ निर्णय जीवन-गाथाओं के अनुसार हो सकता है। उनका विचार है कि महापुरुष अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः उनकी जीवन-गाथाओं को इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए अर्थात इन महापुरुषों की जीवन-गाथाओं के द्वारा इतिहास की शिक्षा प्रदान की जाए। कारलाइल का विचार है कि "सामान्य पुरुष भेड़ों के झुण्ड के समान हैं और महापुरुष उन शिकारी कुत्तों के समान है जो भेड़ों की रक्षा करते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

तथ्यों का संगठन

कक्षा के सम्मुख इस पाठ्य-सामग्री को रखने से पूर्व ही हमें उसका उचित रूप से संगठन करना होगा। इसके संगठन के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तो को अपनाया जा सकता है।

1. एक-समान केन्द्र विधि :-
2. कालक्रम -विधि :-
3. प्रकरण विधि :-
4. परावर्तन विधि :-

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया